सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 मार्च)

फिलिप्पियों 4:7 तब परमेश्वर की शान्ति, जो सब समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरिक्षत रखेगी॥

यहाँ पर जो शान्ति है वो हमारी अपनी शान्ति से कोई संबंध नहीं रखती। ये परमेश्वर की शान्ति है -- जब हम परमेश्वर की शक्ति और भलाई और उनकी हमारे प्रति इच्छा कि, वे हमें अपने बच्चे की तरह दाहिने हाथ से पकड़ लेंगे, ये सब महसूस करते हैं तब ये शान्ति जो की परमेश्वर की शान्ति है, हमारे पास आती है। यहाँ पर विचार यह है की ये शान्ति हमारी सुरक्षा के लिये चौंकीदार की तरह लगातार खड़ी रहती है और हर एक विचार या डर को जो हमारे शत्रुओं से या चिन्ताओ के कारण आते रहते हैं, उन्हें अस्वीकार करती रहती है, उन विचारों पर अविश्वास प्रगट करते हुए उनका विरोध करती है, ऐसे विचारो पर आपत्ति करती है। ये शान्ति मसीही मन को बनाये रखती है ताकि उसके हृदय में परमेश्वर के साथ शांति रहे, प्रभु के साथ भाईचारा रहे, मेलमिलाप रहे - और ये शान्ति उसके मन की सुरक्षा भी करती है, उसके तर्क -- वितर्क करने की क्षमता की रक्षा करती है, उसे आदेश देती है, और दिव्य शक्ति और ज्ञान और प्रेम के बारे में उसे यकीन दिलाते रहती हैं। Z.'03-8 R3128:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 मार्च)

फिलिप्पियों 4:8 ...जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, ...उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।

जो कोई भी झूठ या अतिशयोक्ति के साथ सहानुभूति रखते है, अधिक या कम खुद को अपवित्र करते है। जो कोई भी अपने विचारों की सफाई करता है, और अतिशयोक्ति आदि से बचता है, उसी अनुपात में वो अपने मन और पुरे चरित्र को शुद्‌ध करते रहता है। क्या ये काफी नहीं, कि हम मामलों की सच्चाई के बारे में निश्चित रहें। हमें हर मामले की आगे तक जाँच करनी है, और ये परखना है कि किस हद तक कोई बात आदरणीय है, श्रेष्ठ है ? क्यंकि यधपि प्रभु ने हमारे चरित्र के अधर्मी लक्षणों को ढक दिया है, और अन्त तक अपने मूल्य में उन्हें ढके रखने का वादा करते हैं, लेकिन फिर भी हम अपनी गिरी हुई अवस्था से कोई सहानुभूति नहीं रख सकते हैं, बल्कि इसके विपरित हमें सच्ची श्रेष्ठता और आदर के उच्तम स्तर की चाहत अपने ह्रदय में रखनी है, अपने विचारों में रखनी है, और परमेश्वर तथा सभी सहयगियों के साथ हमारे व्यवहार में रखनी है। Z.'03-9 R3129:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 मार्च)

फिलिप्पियों 4:8 ...जो जो बातें उचित (न्यायोचित) हैं,...उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।

हमें अपने मन को अन्यायपूर्ण बातों को सोचने के लिये नहीं दौड़ने देना है, और हमें अपने हर विचार और शब्द और क्रिया को "न्याय की परीक्षा" से जाँचना है, यद्यपि, उसी के साथ-साथ दूसरों के आचरण को एक अलग दृष्टिकोण से देखना सीखना है - जहाँ तक हो सके, हमारी समझ के अनुसार, हमें दूसरों के आचरण को, करुणा, क्षमा, तरस, मदद के दृष्टिकोण से देखना है। लेकिन "न्याय की परीक्षा" से अपने हर एक विचार या योजना को जांचते समय हमें इतना अधिक सावधान नहीं हो जाना है, कि हम अपने मन की सहमति का उल्लंघन कर दें। Z.'03-9 R3129:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 मार्च)

फिलिप्पियों 4:8 ...और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं,...उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।

हमें इस हद तक पवित्र चीजों से प्रेम करना है और पवित्र चीजों को बढ़ाना है कि जो भी अपवित्र हो वो हमारे लिये दुःखद बन जाये, तकलीफदेह बन जाए और हम अपवित्र ख्यालों को अपनी याददाश्त से हटाने की तीव्र इच्छा रखें, और ऐसा तभी हो सकता है जब हम लगातार उन चीजों के

बारे में सोचें जो पवित्र हों, और जो भी अपवित्र है -- उन पर विचार न करें। हमें सच्चे प्रेम को पहचानना है और उसका सम्मान करना है। जब हम सबसे शुध्द वस्तुओं के बारे में सोचेंगे, तब ये जरूरी है कि हम अपने मानसिक दर्शन को जितना ऊँचा हो सके, उस ऊंचाई पर ले जाए और जितना नज़दीक से हो सके -- हमारे स्वर्गीय पिता और प्रभु यीशु मसीह के चरित्र की मनोहरता को पहचानें, उनके परिपूर्ण प्रेम को पहचानें, और उसी अनुपात में जो भी प्रभु यीशु के पदचिन्हों के पीछे नज़दीक से चल रहें हैं, वे सभी एक दूसरे में इस मनोहर प्रेम को प्रगट करें। Z.'03-9 R3129:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 मार्च)

फिलिप्पियों 4:8 ...जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।

जो भी सद्‌गुण की बातें है, प्रशंसा की बातें है - उत्तम बातें, उत्तम कार्य या किसी के भी श्रेष्ठ विचार - हम इन सभी अच्छी बातों पर सुरक्षित ध्यान लगा सकतें हैं और परिणामस्वरूप हमारे मन और नई सृष्टि को जो भोजन मिलता है, हम खुद को बढ़ते हुए देखते हैं। हमारे मन के नए हो जाने से हम जयादा से जयादा बदलते जाएँगे और हमारे गुरु और प्रभु यीशु मसीह के स्वरूप में, समानता में ज्यादा से ज्यादा करीब आते जाएँगे, हमारा स्वभाव महिमा से महिमा की ओर धीरे धीरे, थोड़ा थोड़ा, एक - एक कदम करके अभी के जीवन में बदलता जायेगा, और यदि हमारे

विचार इसी प्रकृति के रहे और हम अपने प्रभु के साथ मिलकर एक बने रहे, तो हमें पहला पुनरुत्थान में हिस्सा मिलेगा, जो कि हमें सदा के लिए अपने प्रभु यीशु मसीह के स्वरूप और समानता में परिपूर्ण कर देगा। Z.'03-9 R3129:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 मार्च)

फिलिप्पियों 4:11,12 ...मैं ने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं। मैं दीन होना भी जानता हूं और बढ़ना भी जानता हूं:..।

यदि हमें हमारे जीवन के अनुभव उतार चढ़ाव से भरे लगें, तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि हमारे प्रभु ये देखते है कि हमें ऊँचाई और गहराई दोनो प्रकार की समृद्धि की जरूरत है ताकि हमें सही प्रकार से सिखाया जा सके और भविष्य में जो पद हमारे लिए बनाया गया है, हम उसके योग्य बन सके। इसलिए आओ, जैसे प्रेरित ने सीखा, हम भी देखें की हमें कैसे बढ़ना है ताकि सांसारिक समृद्धि हमें हमारी समर्पण की वाचा से भटका न दे; और ये भी सीखें कि घटी में, जरूरत में, कैसे रहना है, ताकि परमेश्वर के ज्ञान और जो उन्हें हमारे लिये सर्वोत्तम लगता है - उसके बहार जाने की इच्छा न करें - और जो है उसी में संतुष्ट रहें। Z.'03-10 R3129:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 मार्च)

1 यूहन्ना 4:12 ...यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।

मैं परमेश्वर की नजर में कुछ हूँ या कुछ भी नहीं, इसे मापने का पैमाना प्रेम है। परमेश्वर हमें प्रेम के द्वारा आँकते हैं। हमारे अन्दर परमेश्वर के प्रति कितना प्रेम है, हमारे भाइयों के प्रति कितना प्रेम है, परमेश्वर के कारणों के लिए कितना प्रेम है, साधारणतया: दुनिया के प्रति कितना प्रेम है; और यहाँ तक कि शत्रुओं से कितना प्रेम है - परमेश्वर हमें हमारी प्रसिद्धि, ज्ञान या प्रभावित करने की शक्ति से नहीं जाँचते हैं. . . इसलिए चरित्र के आँकलन में, सबसे पहले प्रेम आता है और प्रेम ही को परमेश्वर ने मुख्य परिक्षा में रखा है और प्रेम की परिक्षा के द्वारा ही परमेश्वर हमें स्वीकार करते हैं और हम उनके करीब जातें है. . . जो भी परमेश्वर की पवित्र आत्मा के द्वारा उत्पन्न हुए हैं उन्हें अच्छे सयंम का होना है। जिस परमेश्वर ने हमें अन्धकार से निकालकर अदभुत ज्योति में लाया है, उनके गुणों को हम केवल प्रेम के द्वारा ही प्रगट कर सकते हैं। जब हम प्रतिदिन के सभी मामलों में प्रेम दिखाएँ तभी हमारे परमेश्वर की प्रशंसा होती है । Z.'03-56,57 R3150:3; R3150:4; R3151:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 मार्च)

1 कुरिन्थियों 12:18 परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगो को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक कर के देह में रखा है।

मसीह की देह का कोई भी सदस्य यह नहीं कह सकता कि उसे दूसरे सदस्य की जरूरत नहीं है, और न ही कोई सदस्य यह कह सकता है कि मेरे लिए इस देह की सेवा करने लायक कोई कार्य ही नहीं है। हमारे शानदार महिमा से भरे सिर प्रभु यीशु के मार्गदर्शन के अन्दर हर एक सदस्य जो परमेश्वर की पवित्र आत्मा से भरा है और उनकी सेवा करने की तमन्ना रखता है, वह सेवा के कार्यों को कर सकता है। जब इनाम पाने का समय आएगा, तब कौन जनता है कि पौलुस और अपुल्लोस की उपयोगिता का कितना श्रेय कुछ विनम्र लोगों जैसे कि अकिविला और प्रिस्का को दे दिया जाये जिन्होंने अलग अलग तरीकों से इन प्रतिभाशाली भाइयों को प्रोत्साहन दिया, उनकी सेवा की और परमेश्वर के कार्यों में उनकी मदद की, (1 कुरिन्थियों 16:19) और (1 कुरिन्थियों 3:5,6) वचन। Z.'03-59 R3152:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 मार्च)

इब्रानियों 6:10 क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुम ने उसके नाम के लिये इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की, और कर भी रहे हो।

अभी के कटनी के समय को, उसके सुनहरे अवसरों को, सेवा और सहयोग करने के सुनहरे अवसरों को परमेश्वर के किसी भी बच्चे को ऐसे ही नहीं जाने देना चाहिए। उन्हें प्रतिदिन ये प्रयत्न करना चाहिए कि वे शाही झंडे को प्रतिदिन खुद उठाएँ और जिसने उन्हें अंधकार में से ज्योति में बुलाया है उसकी प्रशंसा खुले आम सार्वजनिक रूप से करें, और परमेश्वर की समझदारी के अनुसार उन्होंने हमे जिनकी सेवा भी करने के लिए सभी प्रकार से लाभदायक दर्जा दिया है, हमें कोई भी दिन उन लोगों की सेवा करे बगैर नहीं बिताना चाहिए। Z.'03-59 R3152:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 मार्च)

इब्रानियों 3:13 वरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।

यदि ... हम ये महसूस करते हैं कि, आत्मिक सुस्ती किसी भी हद तक हमारे ऊपर चोरी-छिपे प्रवेश कर चुकी है, हमारी आत्मिक इंद्रियों को स्पष्ट रूप से सुन्न कर रही है, और सच्चाई हम पर अपनी प्रेरणा देने वाली

शक्ति खो रही है, तब हमारा पहला कर्तव्य यह है कि हम प्रार्थना में अपने आप को परमेश्वर के पास ले जाएँ, ताकि उनके और उनके वचनों के साथ संगति कर सकें और इसकी पवित्र शक्ति को महसूस कर सकें। (Z.'03-54) R3149:2 क्योंकि हम मसीह के भागी हुए हैं, यदि हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें। (इब्रानियों 3:14 वचन) आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 मार्च)

इब्रानियों 12:1 इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।

तुम जिसने, तुम्हारे ऊपरी बुलावे के ईनाम को पहचान लिया है, और जो निशाने की ओर दौड़ने का भरसक प्रयत्न कर रहे हो, अपनी--अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर; अपने उद्देश्यों और प्रयत्नों को मजबूत और दृढ़ करो; अपने दृढ़ निश्चय को फिर से नया करो; अपनी धुन को दोगुना करो; व्यर्थ की सांसारिक चिन्ताओं के बोज को अलग हटा दो; अपने उत्साह को बढ़ाओ; और जैसा की प्रेरित पौलुस भी विनती करते हैं, वह दौड़ जिसे तुम्हें दौड़ना है, धीरज से दौड़ो, उसके समान नहीं दौड़ो जो हवा पीटता हुआ लड़ता है, परन्तु उसकी तरह दौड़ो जो एक उद्देश्य को सामने रखकर दौड़ता है, और जो पूरी तरह से दृढ़तापूर्वक भरसक प्रयत्न कर रहा है,

अपने बुलाये जाने और चुन लिए जाने को सिद्ध करने के लिए। Z.03-54 R3149:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 मार्च)

1 तीमुथियुस 1:5 आज्ञा का सारांश यह है, कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपट रहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो।

इसलिए हमें हमारी बुद्धि में इस सच्चाई को स्पष्ट रखना चाहिए कि हमारे लिए और हमारे साथ किये गए सभी दिव्य व्यवहारों का अन्तिम उद्देश्य और हमसे किये गए सभी दिव्य वादों का अन्तिम महत्व, प्रेम में उन्नति कराना है, जो की ईश्वरीय समानता है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम हैं। और इस प्रेम को हममें बढ़ाने के लिए जिस मायने और जिस स्तर तक हमारे प्रभु चाहते हैं, ये आवश्यक है कि यह प्रेम शुद्ध ह्रदय से निकले, जिसका प्रभु के साथ और उनके प्रेम के कानून के साथ पूरा तालमेल हो, और जो शैतान और उसके स्वार्थ के कानून के प्रति पूरी तरह से विरुद्ध हो। Z.'00-360 R2735:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 मार्च)

फिलिप्पियों 3:15-16 सो हम में से जितने सिद्ध हैं, यही विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही विचार हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रगट कर देगा। सो जहां तक हम पहुंचे हैं, उसी के अनुसार चलें॥

उनके लिए यह बहुत जरुरी है, जो परिपूर्ण प्रेम के चिन्ह पर पहुँच चुके हैं -- ताकि वे अपने आप को परमेश्वर की सेवा में सक्रिय रखें, अपना जीवन भाईयों के लिए बलिदान कर दें। वैसे लोग ना ही सिर्फ परमेश्वर के प्रतिनिधि होते हैं, ना ही सिर्फ धार्मिकता के सिद्धांतों पर चलते हैं पर वे परमेश्वर में, और उनकी सामर्थ में बलवन्त होते हैं। ऐसे लोग परमेश्वर के वचनों पर विश्वास करते हैं -- वे तैयार और इच्छुक रहते हैं और कुशल रहते हैं, कि दूसरे भाइयों को भी इस दौड़ में प्रोत्साहन दे सकें। ताकि वे भी उस (परिपूर्ण प्रेम) के चिन्ह को प्राप्त कर सकें। Z.'01-10 R2755:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 मार्च)

नीतिवचन 16:32 विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर के जीत लेने से उत्तम है।

यहाँ पर पास्टर रसल दो तरह के क्रोध के बारे में समझा रहे हैं। यदि स्वभाव में नफरत, दुर्भावना, बैर और जलन के कारण क्रोध है, तो जो भी परमेश्वर के प्रिय पुत्र की नकल बनना चाहते हैं, उन्हें खुद को इस प्रकार

के क्रोध से बचाये रखना चाहिए। यदि धार्मिकता की समझ के कारण अन्याय के प्रति नाराजगी की वजह से क्रोध आये, पाप के प्रति और पाप के विभिन्न प्रकार के प्रति धार्मिकता के मायने में क्रोध आये, तो वह उचित है, लेकिन इस क्रोध को उपयोग करते समय इसके पीछे का प्रोत्साहन प्रेम होना चाहिए और सयंम से सब्र रखते हुए इस क्रोध को अभ्यास में लाना चाहिए। कुछ ऐसी परिस्थितियां भी होगी जिनमे धार्मिक क्रोध का न होना और उसे उपयोग न करना अनुचित होगा। Z.'96-279 R2068:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 मार्च)

इब्रानियों 10:38 …धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा…।

यह काफी नहीं है कि, विश्वास के द्वारा, हम जीवन का पहला आवेग प्राप्त करें, लेकिन, मृत्यु को पार करके जीवन की ओर आने के बाद, उसी माध्यम के द्वारा, हमें आत्मिक पोषण प्राप्त करना जारी रखना चाहिए, जिससे की हमारी निरन्तर बढ़ोतरी हो सके: हमें अवश्य विश्वास के द्वारा चलना है, परमेश्वर की पवित्र आत्मा की अगुआई के द्वारा चलना है, जो सत्य के वचन से हमें मिलती है। विश्वास का जीवन एक निजी मामला है, चाहे वो विश्वास, मन से हो या दिमाग से। यह उपदेशों की स्वीकृति से कहीं अधिक है, जिसे हम पवित्रशास्त्र के द्वारा मानते हैं और इसलिए ये सत्य है; यह सत्य का समावेश है जिसे हमने सत्य के द्वारा साबित

किया है, ताकि सत्य के सिद्धांत हमारे सिद्धांत बन जाएं, और वादें हमारे लिए प्रेरणा बन जाएँ। Z.'95-92,93 R1798:3; 1799:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 मार्च)

1 यूहन्ना 3:14,16 हम जानते हैं, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं; क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं: जो प्रेम नहीं रखता, वह मृत्यु की दशा में रहता है। ...और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए।

सच्चाई के इन "भाइयों" की आखरी और सबसे अधिक गहरी परिक्षाओं में से एक परिक्षा, जिसके तहत शायद सच्चाई का वो भाई जो सबसे अधिक जागा हुआ और परमेश्वर के वचनों के द्वारा सुसज्जित है, वह भी गिर जाएगा, और वह परिक्षा होगी - भाइयों के लिए प्रेम की परीक्षा। ऐसा प्रतीत होता है की, इस तथ्य पर (भाइयों के प्रति प्रेम की परिक्षा में) बहुत से असफल होंगे और इसलिए वे भाई लोग चाहे जितनी भी अच्छे कार्य करें, वे पर्याप्त मात्रा में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिए अयोग्य होंगे। अगर कुछ भाई खासकर कमजोर हैं और ठोकर खा सकते हैं, मसीह के क्रूस के सच्चे सैनिक को किसी को भी तरह से उस कमज़ोर भाई को तुच्छ नहीं मानना है, ना ही उसे बुरा-भला कहना है, जैसा की हमारे बड़े भाई, हमारे कप्तान, प्रभु यीशु कभी भी ऐसा नहीं करेंगे। इसके विपरीत, मसीह के क्रूस का सच्चा सैनिक अपने उस कमज़ोर भाई के प्रति ज्यादा जागरूक और मदद करने वाला होगा, भले ही वह सच्चा सैनिक खुद को

जब मजबूत भाइयों के बीच में पायेगा, तो उन मजबूत भाइयों की संगति से ज्यादा आनन्दित होगा। Z.'99-88 R2453:4,5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 मार्च)

मत्ती 25:28,29 इसलिये वह तोड़ा (हुनर) उस से ले लो, और जिस के पास दस तोड़े (हुनर) हैं, उस को दे दो। क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिस के पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।

तोड़े को मिट्टी में छिपा देने के इस दृष्टान्त में एक-तोड़े वाले व्यक्ति को उदाहरण के लिए क्यों चुना गया? यह उन लोगों की जिम्मेदारी को दिखाने के लिए किया गया जिनके पास सबसे कम हुनर है -- यह दर्शाने के लिए कि प्रभु अपने समर्पित लोगों में से छोटे से छोटों में से कम से कम यह उम्मीद करते हैं कि, उनके पास जो भी हुनर है उसके बारे में वो जाने और उस हुनर का उपयोग करें। और जिनके पास प्रभु, भाइयों और सच्चाई की सेवा करने की छोटी सी भी क्षमता है और यदि वो इस क्षमता का उपयोग करने में लापरवाही करते हैं, तो प्रभु उन लोगों को दोषमुक्त नहीं ठहराएंगे। Z.'01-59 R2765:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 मार्च)

1 पतरस 1:13 इस कारण अपनी बुद्धि की कमर बान्धकर, और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलने वाला है।

इस दौड़ में एक लम्बे, स्थिर और दृढ़ प्रयास के लिये, "अपनी बुद्धि की कमर को अच्छी तरह से बान्ध" लेने के बाद, "सचेत हों"; उत्तेजना के घेरे में अपने आप को उत्तेजित होने न दें, जिससे की आप के अन्दर जो आत्मिक उत्साह है, वह कम समय में ख़त्म हो जाए, और फिर आपके अन्दर निराशा और ठण्डापन आ जाये। बल्कि पूरी तरह से सोच - विचार कर ध्यान से अपने आप को विश्वास और धीरज की परीक्षाओं और अनुशाशनों को लम्बे समय तक धीरज के साथ सहने के लिये तैयार करें। क्योंकि "जो जय पाये", उनके लिये रखे गये आशीषित इनाम को पाने के योग्य बनने के लिए और अपने आप को जयवंत साबित करने के लिये ऐसा करना आवश्यक है। हमारे सामने जो दौड़ है उसे रूक-रूक कर नहीं दौड़ना है बल्कि "सुकर्म में स्थिर रहकर" दौड़ना है। Z.'03-54 R3149:3

आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 मार्च)

1 पतरस 1:14,15 और आज्ञाकारी बालकों की तरह अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल चलन में पवित्र बनो।

कुछ मसीहियों की यह गलत सोच है कि, परमेश्वर हमको तराशते हैं, और परमेश्वर के बच्चे उनके हाथ में केवल निष्क्रिय होकर रहें, पर प्रेरित पतरस ऐसा व्यक्त नहीं करते। प्रेरित पतरस हमें शिक्षा देते हैं कि, हमें अपने आप को दिव्य आदेशों के मुताबिक तरासना है। हमारे अन्दर में हमको कुछ कार्य करना है, और जो ऐसा नहीं कर रहे हैं, पर दब्बू होकर बैठे हैं, और इन्तज़ार कर रहे हैं, कि परमेश्वर उनके जीवन में चमत्कार करेंगे, वह बहुत बड़े धोखे में हैं, और शत्रु को अपने ऊपर लाभ उठाने का मौका दे रहे हैं। और फिर शैतान उन्हें बांधकर बाहरी अन्धकार में डाल देगा। इसलिए हमें अपने आप को खुद प्रेरित करना है, और डरते और काँपते हुए अपने - अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाना है। Z.'03-55 R3150:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 मार्च)

यूहन्ना 8:31,32 ...यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

दिव्य सच्चाई दिव्य माध्यमों को छोड़कर और कहीं से नहीं मिलती है -- वे दिव्य माध्यम हैं -- प्रभु यीशु मसीह, प्रेरित और भविष्यद्वक्ता। वचन में बने रहने का मतलब यह है कि - परमेश्वर की प्रेरणा से लिखाए गए उपदेशों में बने रहना, उन्हें पढ़ना और उनपर ध्यान करना, उन उपदेशों पर पूरा भरोसा करना, और विश्वासी होकर अपने चरित्र को वचनों के मुताबिक ढालना है। इस प्रकार से यदि हम परमेश्वर के वचन में बने रहेंगे, सच्चे चेलों की तरह, हम वाकई में "सत्य को जानेंगे", हम "विश्वास में दृढ़" बनेंगे, और "हमारी आशा के कारण को बता सकेंगे, "पूरे प्रयत्न के साथ उस विश्वास को पाने का यत्न करेंगे जो संतों को एक ही बार सौंपा गया था", 'एक अच्छी लड़ाई लड़ सकेंगे', 'एक अच्छी गवाही बन सकेंगे' और दृढ़ता से 'मसीह के अच्छे योद्धा की तरह धीरज से सहेंगे' -- यहाँ तक कि, प्राण देने तक सहेंगे। Z.'03-61 R3153:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 मार्च)

मत्ती 5:44 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो।

यहाँ इस ओर अपने हृदय के असली स्वभाव को जाँचने का एक रास्ता है। क्या तुम अपने शत्रुओं की भलाई और मदद आनन्दपूर्वक, दयालुता के साथ अपनी पूरी क्षमता के अनुसार करोगे और उनके मार्गों की गलतियों को देखोगे और उनपर जय पा सकोगे? क्या तुम अपने बैरियों के लिए दया के साथ प्रार्थना कर सकते हो और उनकी कमियों को धीरज से सह सकते हो? क्या तुम धीरज के साथ अपने शत्रुओं की अज्ञानताओं और उनकी उन्नति में कमी को सह सकते हो, और उन्हें श्रेष्ठ उदाहरण दिखा कर सर्वोतम मार्ग दिखा सकते हो? यदि मामला ऐसा है तो तुम पाप से घृणा करोगे, पापी से नहीं। तुम्हे पाप से जरूर घृणा करनी चाहिए लेकिन पापी से कदापि नहीं। जब तक परमेश्वर का अचूक निर्णय ये ऐलान न कर दे की पाप और पापी अलग नहीं किए जा सकते हैं, एक साथ जुड़े हुए हैं, तब तक हमें दूसरे भाई पर प्रेम की पकड़ को बनाये रखना है। Z.'91-141 R1330:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 मार्च)

1 कुरिन्थियों 11:31,32 यदि हम अपने आप में जांचते, तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।

नई सृष्टि के रूप में हमारे लिए क्या लाभ और हानि से, और जब हम लगातार इस दुनिया, शरीर और शैतान के साथ युद्ध में होते हैं तब ये लाभ और हानि कब और कैसे आते हैं, इनको जानना हमारे लिए अति लाभदायक है, और यह प्रभु को भी भाता है। आत्मिक इसराएली... को प्रतिदिन, प्रति घण्टे का जीवन हमारे महा याजक, प्रभु यीशु के नज़दीक जीना है। हमको छुड़ौती देने वाले, प्रभु यीशु का लहू हमारे विवेक की अशुद्धता से लगातार हमारी सफाई करता है, ताकि हमको जो उनकी धार्मिकता की चादर विश्वास में मिली है, बपतिस्मा के बाद , जो हमारे लिए शादी का जोड़ा भी है वह मैला न हो जाए, पर हल्का सा दाग भी जो हमारे धार्मिकता की चादर पे लग जाता है वो प्रभु यीशु का लहू उस दाग को धो दे, ताकि हमारी धार्मिकता की चादर "कोई धब्बे या सिकुड़न या ऐसी कोई चीज़ के बिना हो"। Z.'03-4,3 R3125:4,3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 मार्च)

इब्रानियों 10:32,33 परन्तु उन पहले दिनों को स्मरण करो, जिन में तुम ज्योति पाकर दुखों के बड़े झमेले में स्थिर रहे। कुछ तो यों, कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कुछ यों, कि तुम उन के साझी हुए जिन की र्दुदशा की जाती थी।

मजबूत भाइयों को भी मदद की जरुरत है, प्रोत्साहन और दूसरे भाइयों के सहारे की जरुरत है। परमेश्वर ने यह व्यवस्था कुछ ऐसी बनाई है, कि हम पूरी तरह से खुद में काफी नहीं हैं, और हम जो परमेश्वर पर मदद के लिए निर्भर करते हैं, हमें उसके साथ दूसरे भाइयों का सहयोग, प्रोत्साहन, सहानुभूति और प्रेम की जरुरत भी है। जो भाई इस क्लेश से होकर गुजरे हैं, वे इस विचार से सहमत होंगे। इसलिए परमेश्वर के बहुत प्रिय लोगों का, जिनको परमेश्वर की सेवा करने का प्रचुर मात्रा में हुनर और मौका नहीं मिलता है, वैसे भाई लोग इस सुसमाचार के कार्य में, उन भाइयों के लिए सहकर्मी और सहायक बन सकते हैं। Z.'03-40 R3144:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 मार्च)

इब्रानियों 13:5 …मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।

मनुष्य हमारा क्या कर सकता है, उससे हमें नहीं डरना है, या परमेश्वर के कार्य से सम्बन्धित हमें दुखी नहीं होना है, यह सोचकर कि, शैतान या बुरी शक्तियां परमेश्वर के कार्यों को न होने देगी? फिर भी हमें परमेश्वर

के प्रति भक्ति, उत्साह और समझदारी दिखानी है, ताकि हम परमेश्वर के कार्यों में आगे बढ़ सकें, यह सोचते हुए, की पूरी जिम्मेदारी हमारे ऊपर ही है। पर हम ह्रदय से जानते हैं, कि पूरी जिम्मेदारी परमेश्वर के पास है। बहुत पहले किसी ने कहा है, "मैं अविनाशी हूँ जब तक मेरा कार्य पूरा नहीं होता"; यह कथन जो भी परमेश्वर की सेवा में लगे हैं, उनके लिए सत्य है -- "यहोवा के भक्तों की मृत्यु, उनकी दृष्टि में अनमोल है"। `Z.'03-41` R3144:7 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 मार्च)

2 पतरस 3:17-18 इसलिये हे प्रियो, तुम लोग पहले ही से इन बातों को जान कर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फंस कर अपनी स्थिरता को कहीं हाथ से खो न दो। पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ।

जैसे जैसे हम परमेश्वर के वादों पर ध्यान करते हैं, और विश्वास के द्वारा उन्हें खुद पर लागु करते हैं, और उन वादों को हमारे जीवन में पूरा होने को परखने की चेष्टा करते हैं, वैसे वैसे हम ज्ञान में बढ़ते हैं, साथ ही साथ हम अनुग्रह में बढ़ते हैं। क्योंकि जब तक ज्ञान का एक एक अंश जो हमें मिलता है उसे अच्छे और ईमानदार ह्रदय में ग्रहण न किया जाए, और उसी अनुपात में उस ज्ञान के प्रति आज्ञाकारिता और धार्मिकता (अनुग्रह) को न लाया जाए, हम ज्ञान पाने के अगले कदम के लिए तैयार नहीं होंगे, और ज्ञान की बढ़ोतरी इस प्रकार से रुक जाएगी या संभवतः

हम पीछे चले जायेंगे। और ज्ञान की हानि का मतलब होगा उसी मात्रा में अनुग्रह को खोना, और अनुग्रह को खोने का मतलब होगा, उसी अनुपात में ज्ञान को खोना - अंधकार में जाना, परमेश्वर के वादों का ज्यादा से ज्यादा धुँधला होते जाना, ठीक उसी अनुपात में जिस अनुपात में हमारी भलाई या अनुग्रह दुनियादारी या पाप में खो जाती है। `Z.'03-70` R3156:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 मार्च)

1 थिस्सलुनीकियों 5:5,6 ...हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं। इसलिये हम औरों की तरह सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें।

मसीही, प्रभु के चेले और मसीह की पाठशाला में शिष्य होने के नाते, हज़ार साल के राज्य में स्थान पाने के लिए तैयार हो रहे हैं -- क्योंकि महिमा, आदर और अमरता में इन्हें हिस्सा मिलेगा। इसलिए वचनों के द्वारा चेतावनी की जरुरत पड़ती है -- ताकि प्रभु के लोग जागते रहें। उन्हें उनके जैसा नहीं होना है, जो सोते रहते हैं, जो खाली बैठे रहते हैं, न ही उनके जैसा होना है, जो इस जीवन की चिन्ताओं में डुबे रहते हैं, बल्कि उन्हें पूरे धुन के साथ, प्रभु की सेवा में लगे रहना है। प्रभु की सेवा करने का प्रथम लाभ ये है कि, इसके द्वारा वे प्रभु के निकट आते हैं और इस तरह से प्रभु की इच्छा के साथ तालमेल में आ जाते हैं, और दिव्य नमूना की समानता में बारीकी से तैयार होते जाते हैं, और दूसरा उद्देश्य ये है

कि, वे लोग दूसरों के लिए, जो सकेत मार्ग में चल रहे हैं, एक उदाहरण बन जाते हैं। Z.'03-70 R3156:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 मार्च)

यूहन्ना 17:9,20-23 मैं उन के लिये विनती करता हूं ... कि वे सब एक हों ... कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं ... कि जगत जाने कि ... जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा।

हम आश्चर्यचकित होकर यह पूछते हैं कि, ऐसा कैसे हो सकता है कि पिता हमसे वैसा ही प्रेम रखें जैसा उन्होंने प्रभु यीशु से रखा? हमारे प्रभु यीशु हमेशा से ही अपने पिता के साथ सिद्ध तालमेल में थे, वे एक ऐसे पुत्र हैं जिन्होनें पिता की समानता को महिमामय रूप में दिखाया है। लेकिन हमारे साथ ऐसा नहीं है; हम तो पापी थे और हमारे अंदर प्रेम करने योग्य कुछ भी नहीं है। जी हाँ ! लेकिन हमें धोकर और अधिक शुद्ध किया गया है, और हमारा यह मिट्टी का बर्तन अभी भी कितना ही अपरिपूर्ण हो, हमारे ह्रदय परमेश्वर की नजर में परिपूर्ण हैं, क्योकि वे हमारे ह्रदय को पढ़ सकते हैं। और जैसे - जैसे परमेश्वर हमें परिपूर्ण ह्रदय के साथ देखते हैं - एक सिद्ध उद्देश्य और इरादे के साथ - जो की अपनी अपरिपूर्ण देह की कमजोरियों और विकलाँगताओं पर जय पाने का भरसक प्रयत्न कर रहा है, और नम्रता से परमेश्वर के उद्धार, हमारी छुड़ौती के लिए किये गए प्रबंधों पर पूरा भरोसा कर रहा है, वैसे - वैसे परमेश्वर

हममें वो पहचानते जाते हैं जो कि उनके प्रेम के योग्य है। `Z.'03-79` R3161:6 आमीन

सुबह कि सवर्गीय मन्ना **(28** मार्च**)**

2 तिमुथियुस 2:3 मसीह यीशु के अच्छे योद्धा की तरह मेरे साथ दुख उठा।

सच्चा सैनिक अपने युद्ध के कारण पर बहस नहीं करता है। वह इस युद्ध की सेवा के लिये भर्ती होने से पहले ही इसके कारणों के न्याय और धार्मिकता को ठीक रीती से निर्धारित कर लेता है। इसके बाद वह योद्धा इस युध्द के कारणों पर दृढ़तापूर्वक टिका रहता है और इससे सम्बन्धित किसी भी विरोधाभास को टाल देता है। वह इसके बचाव में सब कुछ खर्च करने के लिए तैयार होता है और खुद भी पूरी तरह से बलिदान होने के लिये तैयार होता है। ईमानदारी और पूर्ण निष्ठा के साथ मसीह की सेवा करना महिमामय है। जो सही है उसके पक्ष पर होने में वर्णन से भी बाहर आनंद है, और यह जानते हुए की, रक्त के मैदान और अंधकार की तराइयों के परे राजाओं के विजयी राजा के अति आनंद और शांति में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने का मौका मिलेगा। उस आशा के लिए, किसी को भी युद्ध की कठोरता से नहीं हटना चाहिए, किसी को भी शत्रु के क्रोध के आगे झुकना नहीं चाहिए, और भूख, प्यास, नग्नता, घाव या मृत्यु की निश्चितता के आगे किसी को भी कांपना नहीं चाहिए। `Z.'03-84` R3162:6; 3163:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 मार्च)

इफिसियों 2:8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।

हम जब गिरी हुई जाती के सदस्य थे, तो हम अयोग्य थे कोई भी कार्य करने के लिए जिसको हमारे पवित्र परमेश्वर स्वीकार कर सकें। ...हम अभी जो नई सृष्टि में हैं, वो इसलिए नहीं हैं कि, पुराने शरीर ने कुछ अच्छा किया हो, या कर सकता है। यह परमेश्वर की ओर से दान है, और हमारी ओर से नहीं है। इस पाठ को हमें अच्छी तरह से समझना है, नहीं तो हमको लगातार गिरने का खतरा है।...इसी को प्रेरित पौलुस अच्छे तरीके से समझ पाए, यह नयी सृष्टि बिल्कुल अलग और नई रचना है। हम प्रभु यीशु मसीह में रचे गए हैं, और हम परमेश्वर की कारीगरी हैं, और अच्छे कार्य करने के लिए तैयार किये गए हैं, नाकि अच्छे कार्यों के द्वारा हमें नयी सृष्टि मिली है। `Z.'03-90` R3166:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 मार्च)

2 पतरस 3:11 तो जब कि ये सब वस्तुएं, इस रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए।

परमेश्वर की समानता निश्चित रूप से किसी भी प्रकार की हानिकारक गपशप, कोई भी अशुद्ध या अपवित्र बातचीत, कोई भी निष्ठाहीन या विद्रोही शब्दों को शामिल नहीं कर सकती। जिस किसी ने भी मसीह का

नाम सच्चाई और ईमानदारी से अपनाया है, उन्हें ऐसी बातों को अपने से बहुत दूर कर देना चाहिए। और आइये, हम याद रखें कि हमें प्रतिदिन प्रभु के साथ अपना हिसाब-किताब करना है, ताकि ये पक्का हो जाए, कि कोई भी व्यर्थ कहा हुआ शब्द, जिसका पश्चाताप न किया गया हो, और परिणामस्वरूप जिसकी माफ़ी न मिली हो, ऐसी बातें हमारे विरुद्ध खड़ी न हो सके... यदि हम प्रतिदिन अपना हिसाब परमेश्वर को देते हैं और आनेवाले दिनों में ज्यादा जयवन्त होने की सामर्थ पाने के लिये उनका अनुग्रह ढूंढ़ते हैं, तो हमें परमेश्वर के न्याय से मुक्ति मिल जायेगी और हम मसीह के द्वारा परमेश्वर के सामने ग्रहणयोग्य बनकर खड़े हो पाएंगे, उनकी पवित्र आत्मा हमारी आत्मा के साथ मिलकर गवाही देगी, ताकि हम परमेश्वर को भावते हुए और उनके लिये ग्रहणयोग्य बन सकें। Z.'96-33 R1938:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (31 मार्च)

1 तीमुथियुस 6:12 विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिस के लिये तू बुलाया, गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।

चाहे हमारा युद्ध ज्यादातर रूप से सार्वजनिक हो या निजी हो, लेकिन युद्ध अवश्य होना चाहिए; और इससे भी अधिक, इस युद्ध में हमारे चरित्र की बढ़ोतरी होनी चाहिए और इस युद्ध में हमें विजय भी मिलनी चाहिए, नहीं तो प्रभु हमें "जयवन्त" के रूप में कभी भी स्वीकार नहीं

करेंगे। एक और विचार जिसे हम सभी को ध्यान में रखना चाहिए ... प्रभु जब हमारा आँकलन करेंगें तब हमारे प्रयत्नों के कारण हमने क्या परिणाम प्राप्त किया उसे देखने की जगह, वे उस आत्मा को जानना चाहेंगे जिसने हमें उस परिणाम के लिए प्रेरित किया, यानि वे हमारे मन के इरादों और उसके पीछे के उद्देश्यों को परखेंगें, न कि हमारी क्रियाओं और उसके परिणामों को। इस नज़रिये से, आइये हम इसपर ध्यान दें कि, इतना ही नहीं कि जो हम अपने हाथों से कर पाते हैं, वो हम अपनी पूरी सामर्थ्य से करें, बल्कि प्रभु और उनके कारणों के लिए किया गया हमारा हर एक बलिदान और उपहार, उनके प्रति इतने प्रेम और भक्ति के साथ भरा हो कि, उसे प्रभु निश्चय स्वीकृति दे दें; जैसे की यह उनके लिये और उनसे प्रेम करने के कारण किया गया हो, और न की व्यर्थ की महिमा के लिए। Z.'03-91 R3166:3 आमीन